P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-II*October-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों में अहिंसात्मकता का समीक्षात्मक अध्ययन

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक स्तर के ग्रामीण तथा नगरीय क्षेत्रा के विद्यार्थियों में अहिंसात्मकता का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में इलाहाबाद मण्डल के 36 महाविद्यालयों से कुल 904 (301 बी0ए0, 303 बी0एस0सी0, एवं 300 बी0कॉम) विद्यार्थियों का सामान्य प्रतिचयन विधि से चयन किया गया है। स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों में अहिंसात्मकता की प्रवृत्ति को मापने हेतु डॉ0 वाई.के. नॉगल द्वारा निर्मित अहिंसक अभिवृत्ति मापनी (NVAS) का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में यह पाया गया कि स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों तथा स्नातक स्तर ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं तथा स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र की छात्राओं एवं स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं में अहिंसात्मकता समान पायी गयी। स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्र, स्नातक स्तर की नगरीय क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में तथा स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्र, स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की तुलना में कम अहिंसक प्रवृत्ति रखते है। अतः अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षक, विद्यालयी परिवेश, पारिवारिक पृष्ठभूमि, मित्र समूह, एवं क्षेत्र अहिंसात्मकता की प्रवृत्ति में वृद्धि करके हिंसा को रोकने का प्रबल साधन हो सकते है।

मुख्य शब्द : स्नातक स्तर, ग्रामीण तथा नगरीय विद्यार्थी, अहिंसात्मकता, समीक्षात्मक अध्ययन।

आनन्द यादव
शोध छात्र,
शिक्षा संकाय,
हण्डिया पी0 जी0 कालेज,
हण्डिया, इलाहाबाद

प्रस्तावना

अहिंसात्मकता से तात्पर्य व्यक्ति में अन्तर्निहित उस भावना से है जिसके द्वारा व्यक्ति मन वाणी ओर कर्म से किसी व्यक्ति एवं समूह को हानि नही पहुँचाता और हिंसा नहीं करता है। यूनेस्को एजुकेशन[1] शब्दों में–''अहिंसात्मकता एक पवित्र सिद्धान्त एवं प्रयोग है जो आक्रामकता तथा हिंसा को नकराता है ताकि निश्चित उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके या द्वन्द को संरचनात्मक तरीके से दूर किया जा सके।''

भारत वर्ष सदैव हिंसा का विरोधी एवं अहिंसा का पुजारी राष्ट्र रहा है। किसी भी देश और समाज की आन्तरिक एवं बाह्य दोनों प्रकार की सुरक्षा के विकास के लिए लोगों की हिंसा की प्रवृत्ति का उन्मूलन एवं अहिंसात्मकता का विकास हमारे नैतिक सामाजिक आध्यात्मिक और संवैधानिक आदर्श रहे है।

शिक्षा और अहिंसा का प्राचीन काल से ही सकारात्मक सम्बन्ध रहा है, शिक्षा प्राचीन काल से ही अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती रही है और आज भी वृद्धि का प्रबल साधन है। हिंसा और अहिंसा का सम्बन्ध हमारे नैतिक मानवीय एवं सामाजिक मूल्यों की सापेक्षता है। यदि हमारे कृत्य नैतिक, मानवीय एवं सामाजिक मूल्यों के सापेक्ष है तो हम अहिंसक है और यदि इसके सापेक्ष नहीं है तो हम हिंसक कहलायेंगे।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग[2] (1948–49)

जिसे राधा कृष्णन आयोग भी कहा जाता हैं, शिक्षा के क्षेत्र में पवित्रता के निर्माण के विषय में कहता है

''हमें मानव हृदय को सुसंस्कृत बनाना ही होगा मनोभावों को शिक्षित करना तथा इच्छाशक्ति का अनुशासन, शिक्षा के स्वस्थ्य तन्त्र के अनिवार्य अंग है। धर्म एक व्यापक प्रभाव है, जीवन का गुण है उद्देश्य का उन्ययन है। यदि हमारी संस्थाए शक्ति प्रदान करना चाहती है, तो उनमें सरलता और पवित्रता का वातावरण होना चाहिए जो जीवन को स्थायी रूप से प्रभावित करती है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात निःसन्देह हमनें हर क्षेत्र में प्रगति की है और प्रगति के पथ पर अग्रसर है परन्तु प्रगति के इस मार्ग पर चलने के लिए हमने अहिंसा

का मार्ग त्याग कर हिंसा का मार्ग अपना लिया है जो आने वाले समय में मानव जीवन के अस्तित्व के लिए एक गम्भीर समस्या है। आज भारतीय समाज में पूंजीवाद, क्षेत्रवाद, सम्प्रदायवाद, भाषावाद, पंथवाद आदि की मानसिक संकीर्णता ने लोगों के नैतिक, मानवीय एवं सामाजिक मूल्यों पर गहरा आघात किया है, और दुर्भाग्य वश ऐसे संकीर्णता का प्रस्फुटन करने वाला व्यक्ति भारतीय शिक्षा व्यवस्था के उच्च स्तर पर शिक्षा अर्जित किये हुए होते है तो प्रश्न यह उठता है कि क्या भारत में शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षण संस्थान प्राथमिक स्तर के हों माध्यमिक स्तर के हो या उच्च स्तर के विद्यार्थियों को अहिंसा का पाठ एवं मनोवृत्ति पैदा करने में असफल रहे हैं इसी का अध्ययन करने के लिए शोधकर्त्ता का शीर्षक चुना।

"स्नातक स्तर के ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों में अहिंसात्मकता का समीक्षात्मक अध्ययन करना।"

अध्ययन का उद्देश्य

1. स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की अहिंसात्मक व्यक्त का अध्ययन करना।
2. स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की अहिंसात्मक का अध्ययन करना।
3. स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्र एवं नगरीय क्षेत्र की छात्राओं की अहिंसात्मक की अध्ययन करना ।
4. स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्र एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की अहिंसात्मक का अध्ययन करना।
5. स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र की छात्राओं एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की अहिंसात्मक का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

अध्ययन हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है

1. स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की अहिंसात्मक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की अहिंसात्मक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्र एवं नगरीय क्षेत्र की छात्राओं की अहिंसात्मक में काई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्र एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की अहिंसात्मक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र की छात्राओं एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की अहिंसात्मक में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमन

यह अध्ययन इलाहाबाद मण्डल के बी0ए0, बी0एस0सी0, एवं बी0काम0 के प्रथम वर्ष के विद्यार्थियो तक सीमित है।

शोध प्रक्रिया

शोध अभिकल्प

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण अभिकल्प प्रारूप का प्रयोग किया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

इस समस्या के अध्ययन की जनसंख्या इलाहाबाद मण्डल के बी0ए0, बी0एस0सी0 व बी0काम0 की शिक्षा प्रदान करनें वाले समस्त महाविद्यालय से 904 विद्यार्थियो(बी0 ए0 301,बी.एस.सी. 303,एवं बी0काम0 300) का सामान्य प्रतिचयन विधि से चयन किया गया। जिसमें नगरीय क्षेत्र के कुल 482 विद्यार्थी (236 बालक छात्र, 246 छात्राओं, एवं ग्रामीण क्षेत्र के कुल 422 विद्यार्थी (214 बालक एवं 208 बालिकाओं से आँकड़े एकत्रित किये गये।

शोध उपकरण

स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में अहिंसात्मक का अध्ययन करने हेतु डॅा वाई0 के नॉगल द्वारा निर्मित नॉन वाइलेन्ट एटीट्यूड स्केल (NVAS) का प्रयोग किया गया। डॅा नॉगल द्वारा निर्मित प्रश्नावली में कुल 75 कथन है, जिसके आधार पर ही यह अध्ययन किया जाता है कि विद्यार्थियो के अन्दर अहिंसात्मकता की प्रवृति किस सीमा तक है। डॅा वाई. के नॉगल द्वारा निर्मित प्रश्नावली में कुल 8 विमा से सम्बन्धित 38 धनात्मक एवं 37 नकारात्मक कपन है

तालिका सं0–01

विमा (Diension)	कुल कथन	धनात्मक कथन	ऋणात्मक कथन
समानता	12	7	5
निडरता	07	5	2
मानवता	10	6	4
प्यार	8	3	5
शान्ति	11	5	6
स्व. नियन्त्रण	9	5	4
असहिष्णुता	10	4	6
सत्य	8	3	5
कुल कथन	75	38	37

अंकीकरण

इसमें प्रत्येक कथन के समक्ष पाँच विकल्प दिया

1. पूर्णतया सहमत (पू0स0)
2. सहमत (स0)
3. सन्देह युक्त (स0यु0)
4. असहमत (अ0)
5. पूर्णतया (पू0अ0)

प्रत्येक उत्तरदाता को उपरोक्त पाँच विकल्प में से किसी एक विकल्प के समक्ष (√) के चिन्ह लगाना है। नकारात्मक प्रश्नों के लिए 1,2,3,4,5, एवं सकारात्मक प्रश्नो के लिए 5,4,3,2,1 के रूप में अंक दिये जायेगे। इस अंकन से प्राप्त अंको के योग के आधार पर उत्तरदाता के अहिंसक या हिंसक प्रवृति का अध्ययन किया जायेगा।

परिक्षण की विश्वसनीयता

1. परीक्षण पुर्न परीक्षण विश्वसनीयता _________0.691
2. अर्द्ध विच्छेद विश्वसनीयता _________0.734

परीक्षण की वैधता

डॉ वाई के नॉगल द्वारा निर्मित अहिंसक असमृति मापनी (NVAS) में विषयजन्य व समवर्त्ती वैधता संतोष जनक है। इस वैधता गुणाक की विश्वसनीयता गुणांक 0.721 है।

सांख्यिकीय विश्लेषणः प्रस्तुत शोध में तथ्यो के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। संकलित ऑकडो के सांख्यिकी विश्लेषण द्वारा प्राप्त परिणाम को तालिकावार निम्न क्रम में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका सं0–02
स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों के अहिंसात्मकता के मध्य अन्तर की सार्थकता का परीक्षण

क्र0 सं0	चर	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D)	मध्यमानों के मध्य अन्तर (SEd)	मुक्तांश df	t मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की अहिंसात्मकता	422	277.33	38.02	2.43	902	–1.04	दोनों स्तर पर सार्थक अन्तर नही है
2.	स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की अहिंसात्मकता	482	273.92	35.02				

तालिका सं0–02 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की अहिंसात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नही है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत तथा शोध परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

तालिका सं0–03
स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं के अहिंसात्मकता के मध्य अन्तर की सार्थकता का परीक्षण

क्र0 सं0	चर	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D)	मध्यमानों के मध्य अन्तर (SEd)	मुक्तांश df	t मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की अहिंसात्मकता	214	275.49	37.94	3.702	420	1.01	दोनों स्तर पर सार्थक अन्तर नही है
2.	स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की अहिंसात्मकता	208	279.23	38.11				

तालिका सं0–03 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों एवं स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की अहिंसात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नही है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत तथा शोध परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

तालिका सं0–04
स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्र एवं नगरीय क्षेत्र की छात्राओं की अहिंसात्मकता के मध्य अन्तर की सार्थकता का परीक्षण

क्र0 सं0	चर	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D)	मध्यमानों के मध्य अन्तर (SEd)	मुक्तांश df	t-मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्रों की अहिंसात्मकता	236	292.35	23.47	2.608	480	12.47	.01स्तर पर सार्थक अन्तर है।
2.	स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र की छात्राओं की अहिंसात्मकता	246	259.79	28.79				

तालिका सं0–04 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्रों की अहिंसात्मकता और स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र की छात्राओं की अहिंसात्मकता में सार्थक अन्तर (.01 स्तर पर) है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत एवं शोध परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्र एवं नगरीय क्षेत्र की छात्राओं की अहिंसात्मकता में सार्थक अन्तर है और स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्र स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में अधिक अहिंसक प्रवृत्ति रखते हैं।

तालिका सं0–05
स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्र एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की अहिंसात्मकता के मध्य अन्तर की सार्थकता का परीक्षण

क्र0 सं0	चर	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D)	मध्यमानों के मध्य अन्तर (SEd)	मुक्तांश df	t-मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्रों की अहिंसात्मकता	236	299.34	28.51	3.145	448	5.357	.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है।
2.	स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रो की अहिंसात्मकता	214	275.49	37.93				

तालिका सं0–05 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्रों की अहिंसात्मकता एवं स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की अहिंसात्मकता में सार्थक अन्तर (.01 स्तर पर है) अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत एवं शोध परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्र एवं स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की अहिंसात्मकता में सार्थक अन्तर है और स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्र स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की तुलना में अधिक अहिंसक प्रवृत्ति रखते है।

तालिका सं0–06
स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र की छात्राओं एवं ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की अहिंसात्मकता के मध्य अन्तर की सार्थकता का परीक्षण

क्र0 सं0	चर	विद्यार्थियों की संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D)	मध्यमानों के मध्य अन्तर (SEd)	मुक्तांश df	t-मूल्य	सार्थकता स्तर
1.	स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्राओं की अहिंसात्मकता	246	256.26	31.46	3.264	452	–7. 0329	दोनों स्तर पर सार्थक अन्तर नही
2.	स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की अहिंसात्मकता	208	279.22	38011				

तालिका सं0–06 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र की छात्राओं एवं स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की अहिंसात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नही है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत एवं शोध परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के प्रदत्तों के सांख्यिकी विश्लेषण व विवेचना से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुआ।

1. स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की अहिंसात्मकता समान है।
2. स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों एवं स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की अहिंसात्मकता समान है।
3. स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्र एवं स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र की छात्राओं की अहिंसात्मकता में अन्तर पाया गया। स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्र स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र की छात्राओं की तुलना में कम अहिंसक है।
4. स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्रों एवं स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की अहिंसात्मकता में अन्तर पाया गया। स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्र स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की तुलना में कम अहिंसक है।
5. स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र की छात्राओं एवं स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की अहिंसात्मकता समान है।

सुझाव

उपरोक्त परिणाम से स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के विद्यार्थियों की अहिंसात्मकता समान है एवं साथ ही साथ स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों एवं स्नातक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के छात्राओं की अहिंसात्मकता लगभग समान पायी। स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र की छात्राओं में नगरीय क्षेत्र के छात्रों की तुलना में एवं स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र के छात्र ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों की तुलना में कम अहिंसक पाये। प्राप्त परिणाम यह दर्शाता है कि स्नातक स्तर के नगरीय क्षेत्र की छात्राएं एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र अधिक अहिंसक है। विद्यालयी परिवेश गृह वातावरण, पारिवारिक पृष्ठिभूमि, मूल्य, आदर्श, संस्कार एवं नैतिकता की जहाँ कही भी समस्या है वहाँ पर हिंसक प्रवृत्ति पायी जाती है जिस पर शिक्षक, समाज एवं

सरकार को ध्यान देने की महती आवश्यकता है। एक शिक्षक के रूप में प्रत्येक शिक्षक का यह दायित्व है कि वह अपने मूल्य, आचरण, आदर्श को शुद्ध रखते हुए अपनें विद्यार्थियों में अहिंसा रूपी बीज का प्रस्फुटन करें। चोरी, हत्या, बलात्कार, लूट, धार्मिक कट्टरता एवं लगातार एक दूसरे के प्रति रखी जानें वाली नकारात्मक मनोवृत्ति को कम करने के लिए शिक्षक के साथ विद्यालयी, वातावरण एवं समाज व परिवार को भी आगे आने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उन्नीथन, टी.के. एवं योगेन्द्र सिंह; सोशियोलॉजी ऑफ नॉन वाइलेन्स, इण्डिया इण्टरनेशनल सेन्टर, न्यू देहली 1969 ।
2. उपाध्याय, जे.जे. राम; द्वितीय संस्करण, सेन्ट्रल ला एजेन्सी, इलाहाबाद 2002 ।
3. कौल, लोकेश; शैक्षिक अनुसन्धान की प्रणाली, दिल्ली विकास पब्लिकेशन नई दिल्ली 2005 ।
4. गुप्ता एस0पी0; आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद 2006 ।
5. गांधी अरूण; वर्ल्ड विदाउट वाइलेन्स, विले इस्टर्न लिमिटेड वाल्यूम 2005।
6. वाइलेन्स एण्ड इट्स कजिज; पब्लिस्ड बाई द यूनाइटेड नेशन्स एजुकेशन साइन्स एण्ड कल्चरल आर्गनाइजेशन (जर्नल)।
7. बोस, निर्मल कुमार; स्टडीज इन गॉधिज्म, नवजीवन पाब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद 14, 1972 ।
8. माथुर जे0एस0; नॉन वाइलेन्स एण्ड सोशल चेन्ज, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद–4, 1977 ।
9. राजपूत जगमोहन सिंह एवं राजेन्द्र दीक्षित; शिक्षा में मूल्यों के सरोकार, किताब घर पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2012 ।

पाद टिप्पणी

1. यूनेस्को एजुकेशन द्वारा नान वायलेन्स इन एजुकेशन विफ्रेश वाई मि0 कोई चोरो मत्सुरा, डायरेक्टर जनरल ऑफ यूनेस्को wttp://portal/unesco.org/education/er_id Page-1
2. द रिपोर्ट ऑफ द यूनिवर्सिटी एजुकेशन कमीशन (1948–49) खण्ड–1 1962, दिल्ली मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन, पृ0–300 द्वारा जगमोहन सिंह राजपूत : शिक्षा के मूल्यों का सरोकार, किताब घर पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2012, पृ0–18